Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Prakrit, Jainshastra aur Ahimsa ShodhSamsthan, Vaishali
Swarna Jayanti Gaurav Granth

Folder No.	012064
Granth Name	Swarna Jayanti Gaurav Granth
Author	Rushabhchandra Jain
Publisher	Prakrit, Jainshastra aur Ahimsa Shodh Samsthan Vaishali
Edition	1
Year	2010
Pages	520

प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
स्वर्ण जयन्ती गौरव ग्रन्थ

फोल्डर नं.	०१२०६४
ग्रन्थ	स्वर्ण जयन्ती गौरव ग्रन्थ
मूल	डॉ. ऋषभचंद्र जैन
प्रकाशक	प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	२०१०
पृष्ठ	५२०

मुख्य टाइटल
प्रधान सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
सुपंडिय – पसत्थि (सत्पण्डित – प्रशस्ति) – प्रो. डॉ राजाराम जैन ------------------------------ १-२
राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद का भाषण -- ३-७
Presidential Address of Shri R. R. Diwakar Governor of Bihar ---------------------------------- 8-10
बिहार के शिक्षा – मंत्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा का भाषण ------------------------------------- ११-१३
Address of Shri Shanti Prasad Jain --- 11-45
प्राकृत शोध संस्थान के उदय एवं विकास की गौरव गाथा – डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल --------- १६-२२
प्राकृत जैनशास्त्र औऱ अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली वासोकुण्ड क अतीत गौरव और वर्तमान
– डॉ देवनारायण शर्मा -- २३-२५

वैशाली के सारस्वत सन्त पुण्यलोक डॉ हीरालाल जैन – साहित्य वाचस्पति डॉ. श्रीरंजन
सूरिदेव -- २६-३१
My Revered Guru – Dr Jain Late Dr. J. C. Sikdar-- 32-44
डॉ हीरालाल जैन ग्रंथ परिचय – डॉ धरमचंद जैन -- ४५-५६
डाक टिकट से सम्मानित डॉ स्व जगदीश चन्द्र जैन – डॉ कपूरचन्द जैन -------------------- ५७-५८
प्राकृत – भाषा की प्राचीनता एवं सार्वजनीनता – प्रो. डॉ. राजाराम जैन ----------------------- ५९-९७
प्राकृत एवं पालि भाषा का सम्बन्ध – डॉ. विजयकुमार जैन ---------------------------------- ९८-१०३
कुवलयमाला कहा – स्व रमा कान्त जैन -- १०४
संस्कृत – नाट्य – साहित्य में प्राकृत – प्रयोग की पृष्ठभूमि – प्रो. डॉ. प्रमोद कुमार सिंह --- १०५-१०७
Jaina Theory of Production of Sound and Evolution of Language - Dr. R. P. Poddar 108-113
आचार्यश्री सुनीलसागरजी का प्राकृत काव्य साहित्य – डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज ---------- ११४-११८
प्राकृत साहित्य में वर्णित वास्तुविज्ञान – डॉ. जयकुमार उपाध्ये ------------------------------- ११९-१२६
ज्ञाताधर्म कथा में वर्णित बौद्धिक दृष्टि – डॉ. एच. सी जैन --------------------------------- १२७-१३५
आधुनिक युग में भगवान महावीर के जीवन - मूल्यों की प्रासंगिकता – दुलीचंद जैन ------ १३६-१४१
जैनधर्म सम्मत अहिंसा का प्रशिक्षण – प्रो. डॉ. भागचन्द्र जैन भागेन्दु ----------------------- १४२-१४९
विश्व – शांति और अनेकांतवाद – डॉ. शेखरचन्द्र जैन --- १५०-१५९
An Introduction to jain Philosophy – Dr. Vijaya Kumar --160-181
जैन दर्शन में मन – एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. नेमिचन्द्र जैन ------------------------ १८२-१८६
जैन दर्शन में पर्याय का स्वरुप – डॉ. वीरसागर जैन -- १८७-१९१
क्षमा की शक्ति – सुरेश जैन आई. ए. एस सेनि -- १९२-१९७
आगम और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्रमणाचार – डॉ. श्रेयांसकुमार जैन ---------------------- १९८-२०५
श्रमणाचार विषयक ग्रन्थों में मुनि – आर्यिकाओं की वन्दना – विधि – डॉ. कमलेश कुमार
जैन -- २०६-२११
श्रावक के षटकर्म – उपादेयता – विमला जैन विमल -- २१२-२१७
जैन आगम के आलोक में पूजन विधान – प्रतिष्ठाचार्य पं. वर्द्धमान कुमार जैन सोंरया ------ २१८-२२३
भारतीय तन्त्र – साधना और जैन धर्म – दर्शन एक समन्वयात्मक विवेचन – प्रो. सागरमल
जैन --- २२४-२५३
अष्टाङ्गयोग – डॉ. रामप्रकाश पोद्दार --- २५४-२६३
अहिंसा की परिधि में पर्यावरण सन्तुलन – प्रो. डॉ. पुष्पलता जैन -------------------------- २६४-२७४
पर्यावरण संतुलन और जैन सिद्धान्त – डॉ. पी. सी. जैन -- २७५-२८३
जैनदर्शन में जीव और पर्यावरण चेतना – रामनरेश नीरज जैन ----------------------------- २८४-२९१
महावीर – युग की वैशाली – साहित्यवाचस्पति डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव ------------------------ २९२-२९६
जैन संस्कृति – डॉ. वशिष्ठ नारायण सिन्हा --- २९७-३३३
तीर्थंकर ऋषभदेव का निर्वाण स्थल – डॉ. रमेशचन्द्र जैन ---------------------------------- ३३४-३४३
जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकर – डॉ. शर्मिला जैन -- ३४४-३५८
सूरिमंत्र और उसकी महत्ता – प्रतिष्ठाचार्य पं. विमलकुमार जैन सोरंया ----------------------- ३५९-३६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन साहित्य में रामकथा – डॉ. गोकुलचन्द्र जैन -- ३६७-३७१
राजा श्री खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख – डॉ. शशिकान्त ------------------------------ ३७२-३७५
खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख एवं जैनधर्म – डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा --------------- ३७६-३८१
केरली संस्कृति में जैन योगदान – राजमल जैन --- ३८२-३९९
South East Asia and India Ocean in Jaina Literature – Prof. Bhagchandra Jain ------- 400-413
आचार्य कुंदकुंद और उनके चौरासी पाहुड – ले. जितेन्द्र सौगानी --------------------------- ४१४-४१७
अज्ञात जैन विद्वान पं. नन्दलाल जी छावडा का साहित्यिक अवदान – प्रो. डॉ. फूलचन्द जैन प्रेमी --- ४१८-४२६
भटटारक सुरेन्द्रकीर्ति एवं उनकी गुरु – शिष्य परम्परा – डॉ. कस्तूरचन्द्र जैन सुमन ------- ४२७-४३१
श्री पं. नाथूराम प्रेमी की सम्पादन – कला अर्द्धकथानक के संदर्भ में – डॉ. जिनेन्द्र जैन ---- ४३२-४३६
वैदना की गणितीय समतुल्य निश्चलताएँ – डॉ. एल. सी. जैन ---------------------------- ४३७-४४३
सूर्यप्रज्ञप्ति में वर्णित जैनज्योतिष – डॉ. जयकुमार उपाध्ये -------------------------------- ४४४-४५०
आयुर्वेद और पतज्जलि – डॉ. गजेन्द्र कुमार जैन -- ४५१-४६०
जैन महिलाओं के व्यक्तित्वका चतुर्मुखी विकास – विमला जैन ----------------------------- ४६१-४६८
संस्थान चित्रावली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org